

# ऐसे-ऐसे

## पाठ का सार/प्रतिपाद्य -

प्रस्तुत नाटक 'ऐसे-ऐसे' के लेखक 'विष्णु प्रभाकर' जी हैं। यह एक हास्य प्रधान नाटक है। पाठ में एक छोटे बच्चे के मनोभावों को चित्रित किया गया है। अक्सर छोटे बच्चे अपनी गलती को छुपाने के लिए झूठ बोलते हैं, जो कि गलत है। नाटक का मुख्य पात्र मोहन है। वह एक विद्यार्थी है। उसकी गर्मियों की छुट्टिया समाप्त होने वाली है। एक दिन वह अपने पिताजी के साथ बाहर जाता है। घर लौटते समय रास्ते में ही उसके पेट में अचानक दर्द शुरू हो जाता है। घर, आस-पास वाले, डॉक्टर और वैद्य सभी परेशान हो जाते हैं। सभी अपने-अपने तरीके से इलाज करते हैं लेकिन उनके इलाज का भी कोई असर नहीं होता है। सबसे पहले एक पड़ोसी आते हैं और अपना दुःख भी प्रकट करते हैं। इसी प्रकार वैद्य जी भी आए और अपने अनुभव के अनुसार बीमारी का पता लगाकर दवा दे गए। डाक्टर ने भी इसी प्रकार अपना काम किया। परंतु मोहन की बीमारी पर इसका कोई असर नहीं हुआ। जब मास्टर जी को इस बात का पता चला तो वे मोहन से मिलने आए। फिर उन्होंने इसका कारण बताया कि मोहन के विद्यालय की छुट्टियाँ समाप्त हो चुकी हैं और मोहन का गृहकार्य पूरा न होने के कारण वह बहाना कर रहा है ताकि उसे कल विद्यालय न जाना पड़े। इस प्रकार मोहन का झूठ पकड़ा जाता है। अर्थात् ऐसे-ऐसे कोई पेट दर्द नहीं बल्कि सज़ा पाने का डर था।

## मोहन की चारित्रिक विशेषताएँ -

- (1) **नादान** – मोहन एक अबोध बालक है। छुट्टियों का समय बीत जाने पर भी उसका गृहकार्य समाप्त नहीं होता है। जब उसे कोई उपाय नहीं दिखता तो वह झूठ बोलकर अपना बचाव करना चाहता है। वह यह नहीं जानता था कि वह अधिक समय तक सबको मूर्ख नहीं बना सकता।
- (2) **नटखट** – मोहन का स्वभाव नटखट है। तभी तो अपना गृह कार्य करना भूल जाने के बाद सज़ा से बचने के लिए उसने सबसे झूठ बोला।
- (3) **कुशल अभीनेता** – नटखट और अबोध होने के साथ-साथ मोहन एक कुशल अभीनेता भी है। बड़ी ही कुशलता से उसने सबके समक्ष बीमार होने और पेट में दर्द होने का अभिनय किया वह साधारण नहीं है।

## पाठ का उद्देश्य -

प्रस्तुत पाठ के माध्यम से लेखक ने बाल मनोभावों का चित्रण किया है। एक बच्चे के मन में आए विचारों को बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

## पाठ का संदेश -

पाठ के माध्यम से लेखक ने हमें यह संदेश दिया है कि अपनी गलती को छिपाने के लिए हमें झूठ नहीं बोलना चाहिए बल्कि अपनी गलती का सुधार करना चाहिए। हमारी एक गलती या झूठ से हमारे परिवार के सदस्यों को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।